



# the ECMS post

e-magazine from the Education committee of the Maheshwari Samaj (Society), Jaipur

Vol. • 1

Issue • 1

Tuesday, 5 September, 2023

Monthly

## Teacher's Day Special

# The Qualities of a Good Teacher



*Sadhguru explain the qualities that a good teacher must possess, and the significance of a teacher in shaping the child.*

### *The Significance of Teachers' Day*

**Sadhguru:** September 5 in India happens to be Teachers' Day in India because it is the birthday of Dr. Radhakrishnan, the second President of India, who happened to be a schoolteacher to start with. It is a wonderful compliment to the teachers of the nation that one of our Presidents was actually a schoolteacher.

In Indian culture, we have always recognized a teacher as a very important part of one's life, to the extent, we said: "Acharya devo bhava", which means a teacher is like god. Because generally, growing children spent more time with their teachers than with their parents. The idea of parents sending children to school is because somewhere, they know that someone else could be a better influence upon their children than themselves.



### *The Importance of a Teacher*

People think there is no longer any significance to a teacher in today's generation because everything that a teacher can say, the Internet can say. But a teacher has a significant role in the making of an individual human being, in the making of a society, a nation and the world at large. In fact, I think the significance of teachers has gone up manifold because the burden of delivering information has been taken away from them.

A teacher's job becomes mainly to inspire and enhance a student as a human being, which has always been the main task. A teacher is no longer just a tape recorder who reads something and rattles out some information to you. He or she is someone who is going to make a student's life by inspiring them to be in a certain way.

Largely for many children, which teacher is teaching a particular subject determines whether they love or hate that subject. If a student identifies with the teacher, if the teacher is inspiring enough, the subject suddenly becomes interesting. A teacher definitely plays a big role in the process of enhancing capabilities and developing a child's interest in a particular subject.

### *The Qualities of a Good Teacher*

If we have to build any nation into something worthwhile, the highest caliber of people should go into school teaching. What kind of influence the child comes under in those first 15 years determines many things about their life. The best quality of minds, the highest level of integrity and the most lively levels of inspiration should go into the making of a teacher. But today, we have set up an economic and social situation where many people become school teachers only because they cannot go anywhere else. This is not true for all teachers of course, but this is happening with many teachers. This has to change. If this does not change, we will not build a society of any substance. We will build very low quality human beings, a low quality society and low quality nations.





## Intelligence, Integrity and Inspiration

A teacher does not mean he has to have ten PhDs hanging from his head. A teacher does not mean children should just wait for the dole-out of what the teacher knows. A teacher means in that person's presence, people should learn things that even the teacher does not know. Children are humanity in the making. What a teacher makes of them when they are in their hands is one of the greatest responsibilities and privileges a human being can have. Any human activity is significant only if we are able to touch another life. That you can actually shape another life is a tremendous privilege. When such a privilege is being vested in someone's hands, it is very important that the highest caliber of minds, and the highest integrity and inspiration goes into that.

**Teacher:** Does a teacher need to have the quality of being popular?

**Sadhguru:** Yes, popularity is important. By popularity, I do not mean populism and compromise. But if you are not popular, everyone will work against you and you will not be effective. You are very effective only when everyone cooperates willingly. If no one wants to cooperate with you, you are not going to be effective.

### How Can A Teacher Become Popular?

You must become that kind of a person that you do not have to say a thing but everyone wants to be like you. Do you know how easy it would be to run a school then? You must learn to dance like them, you must learn to sing like them, you learn to speak like them, then they say "Wow, this is how I want to be."

The trouble with most adults is they want to do the same things with a 14-year-old that they did when he or she was a three-year-old. When your child was a three-year-old, it crawled all over the place. You also crawled, played and tried to speak like them – cuckoo-poobo, peckaboo – everything was nice. Then he stood up and now he has become a fourteen-year-old boy.

What that means is he is trying to be his own man. He is in a hurry! When you crawled with him when he was three years old, he also enjoyed it. But now he wants to swing. You should also swing with him. If you still want to crawl, it will not work. If you want to be of some value to your children, whether they are your own biological children or they are studying with you, the most important thing is that when they see you, they must say, "Wow, I want to be like this!"

You must learn to dance like them, sing like them and speak like them. Then they will say "Wow, this is how I want to be." Once they want to be like you, there is no issue in making things happen.

■ ISHA Foundation





# पढ़ो, बढ़ो, करो

शिक्षकों के ये तीन शब्द जो हमें जिंदगी में शिखर तक पहुंचाते हैं



6 शिष्य के मन में सीखने की इच्छा को जागृत कर दे, वही सच्चा शिक्षक है। सही-गलत का भेद बताकर शिक्षक ही समाज और देश के विवेक को जागृत करता है। शिक्षक जब कहते हैं - पढ़ो, बढ़ो और करो.. तो ये सिर्फ उनके निर्देश नहीं होते, इन तीन शब्दों के पीछे एक रचनाकार का मन होता है, जो सिर्फ बच्चे का ही नहीं एक समाज और एक राष्ट्र का निर्माण कर रहा होता है। इन शब्दों में भविष्य देख सकने की क्षमता होती है।

शिक्षक की महिमा को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। वह शिक्षक ही है, जो हमें गढ़ते हैं, हमें आगे बढ़ने की, संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं। हमारे जीवन को सजाते हैं, संवारते हैं। शिक्षक ही हमें सही और गलत का भेद बताते हैं। सही गलत का भेद बताकर शिक्षक ही समाज और देश के विवेक को जागृत करता है। कहने का अर्थ यह है कि बिना शिक्षक के हमारा जीवन कुछ नहीं है। शिक्षक हमारी प्रेरणा हैं, हमारे आदर्श हैं। शिक्षक हमारे सपनों को पूरा करने में सहायक होते हैं।

शिक्षक हमेशा हमसे कहते हैं - बड़े सपने देखो, बहुत बड़े सपने देखो, बड़े काम करो, बहुत बड़े काम करो, साहस करो, खूब साहस करो। शिक्षक हमें यही तो सिखाते हैं। इस सीख की बुनियाद पर वे हर बच्चे को अपना भविष्य खुद रचने की काबिलियत देते हैं। शिक्षक हैं, तो सब कुछ संभव है। शिक्षक हमेशा सबसे यही कहते हैं - पढ़ो, बढ़ो और करो। ये तीन शब्द केवल शब्द मात्र नहीं हैं। ये जीवन के मूल मंत्र हैं। पूरा जीवन ही इन तीन शब्दों पर टिका हुआ है। पढ़ने के बाद बढ़ना जरूरी है, यदि आप पढ़कर रुक गए, तो बढ़ना व्यर्थ हो जाता है। इसी तरह जो आपने पढ़ा, उसे व्यावहारिक रूप से करना जरूरी हो जाता है। पढ़ाई की सार्थकता तभी है। इन तीन शब्दों को बिना अपने जीवन में उतार लिया, वह जीवन में किसी क्षेत्र में पीछे नहीं रह सकता।

## भावी पीढ़ी तैयार करता है शिक्षक

शिक्षक की जिम्मेदारी बहुत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि वह भावी पीढ़ी तैयार करता है। शिक्षक बच्चों के आदर्श होते हैं, इसलिए शिक्षक को कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए, जिससे बच्चों के विश्वास को ठेस लगे। बच्चों को अपने शिक्षक पर इतना विश्वास होता है कि वह शिक्षक के आगे अपने माता-पिता की बात को भी अनदेखा कर जाते हैं। यदि शिक्षक बच्चों को कोई बात बताते या सिखाते हैं, यदि माता-पिता उसमें कोई सुधार या बदलाव करना चाहते हैं, तो वह नहीं मानते। वे स्पष्ट कहते हैं कि नहीं, टीचर ने ऐसे ही कहा है। शिक्षकों को अपने व्यवहार, आचरण पर भी ध्यान रखना बहुत जरूरी होता है, क्योंकि वह भावी पीढ़ी का निर्माता है।

कहने का अर्थ यह है कि शिक्षक की छवि आदर्श होनी चाहिए। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने शिक्षक के बारे में कहा है कि सच्चा शिक्षक वह है, जो मित्र, सहयोगी और पथ प्रदर्शक का कार्य करे। शिक्षक को सत्य आचरण वाला होना चाहिए। इस पेशे को केवल व्यवसाय के रूप में स्वीकार करने वाला व्यक्ति कभी आदर्श शिक्षक नहीं हो सकता और आदर्श शिक्षक वही है, जो इस व्यवसाय को सेवा समझ कर कार्य करे। एक अच्छा शिक्षक अपने छात्रों के लिए पढ़ाई आसान बना देता है। शिक्षक के लिए पढ़ाना धर्म है। यह पेशा वह किसी के दबाव में नहीं, आत्मा की प्रेरणा से स्वीकार करता है। शिक्षक दिवस पर सभी शिक्षकों, गुरुओं को वंदन।





## स्वाधीनता दिवस

# सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने बांधा समां

**दी** एजुकेशन कमेटी ऑफ माहेश्वरी समान (सोमायटी) जयपुर की ओर से तिलक नगर स्थित माहेश्वरी सैकेंडरी स्कूल प्रांगण में आजादी का पर्व धूमधाम से मनाया गया। देशभक्ति गीत, नृत्य, विभिन्न झांकियों व परेड से वातावरण देशभक्ति के रंग में रंग गया। बच्चों ने देशभक्ति गीतों से सबका मन मोह लिया। झांकियों के माध्यम से भारत के इतिहास को दिखाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि आईएएस प्रवीण गुप्ता, विशिष्ट अतिथि सीए प्रमोद कुमार बूब, विशेष अतिथि रामस्वरूप जाजू, ईसीएमएस अध्यक्ष केदारमल भाला, उपाध्यक्ष बजरंगलाल बाहेती, महासचिव शिक्षा मधुसूदन बिहानी और महामंत्री (समाज) मनोज मूंदड़ा थे। कार्यक्रम की शुरुआत ध्वजारोहण से की गई। इसके बाद विभिन्न स्कूल के बच्चों द्वारा मनभावन प्रस्तुतियां दी गईं, जिन्हें सभी ने सराहा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आईएएस प्रवीण गुप्ता ने कहा कि पंद्रह अगस्त का दिन हमें आजादी दिलाने वाले वीरों, शहीदों की याद दिलाता है। हम सभी को देश की रक्षा और उन्नति का प्रण लेने के लिए प्रेरित करता है। विशिष्ट अतिथि प्रमोद कुमार बूब ने कहा कि हमें तिरंगे की शान को बढ़ाने में यथासंभव योगदान करना चाहिए। ईसीएमएस अध्यक्ष केदारमल भाला ने कहा कि तिरंगे की फिजाओं में आज भी शहीदों की महक बाकी है, जो हमें देश प्रेम के भावनों से ओत-प्रोत कर देती है। महासचिव शिक्षा, मधुसूदन बिहानी ने ईसीएमएस की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने ईसीएमएस की भविष्य की योजनाओं के बारे में भी बताया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं, शिक्षक-शिक्षिकाएं व अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।





## निर्माण नगर में हुआ बहुमंजिला भवन का भूमि पूजन व शिलान्यास, 20 करोड़ की लागत से होगा तैयार

दी एजुकेशन कमेटी ऑफ माहेश्वरी समाज (सोसायटी) जयपुर के लिए 2 सितंबर, 2023 का दिन अविस्मरणीय बन गया। ईसीएमएस ने इस दिन निर्माण नगर में अत्याधुनिक बहुमंजिला, बहुउद्देश्यीय भवन के निर्माण के लिए भूमि पूजन और शिलान्यास किया। भवन का भूमि पूजन प्रसिद्ध समाजसेवी व व्यवसायी श्री गोविंद माहेश्वरी (परवाल) ने किया। भूमि पूजन व शिलान्यास समारोह के मुख्य अतिथि श्री बंकटलाल माहेश्वरी (तोषनीवाल), विशिष्ट अतिथि सीए अरुण लोहिया थे। इन सभी के सान्निध्य व ईसीएमएस के पदाधिकारियों की मौजूदगी में हुए इस कार्यक्रम में समाज के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे। ईसीएमएस के अध्यक्ष केदारमल भाला ने इस अवसर पर कहा कि इस भवन के निर्माण से बच्चों को गुणवत्तापूर्ण न्यायिक व सिविल शिक्षा के लिए दूर नहीं जाना पड़ेगा। ईसीएमएस के महासचिव (शिक्षा) मधुसूदन बिहानी ने कहा कि ईसीएमएस का यह एक साहसिक कदम है। इस बहुमंजिला भवन में प्री-प्राइमरी संस्कृति स्कूल, महेश हॉस्टल और महेश एकेडमी फॉर एक्सलेंस संचालित किया जाएगा। पूरा भवन वातानुकूलित होगा। इसमें अत्याधुनिक व विशाल लाइब्रेरी भी होगी। हॉस्टल में 32 कमरे होंगे। इस बहुमंजिला भवन में म्यूजिक, डांस, योगा, थिएटर आदि रचनात्मक प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। एक मिनी ऑडिटोरियम भी भवन में होगा। भवन निर्माण में करीब 20 करोड़ की लागत



आएगी। कार्यक्रम को श्री गोविंद माहेश्वरी, श्री बंकटलाल माहेश्वरी और सीए अरुण लोहिया ने भी संबोधित किया। ईसीएमएस के कोषाध्यक्ष सीए अनिल शारदा, महामंत्री (समाज) मनोज मूंदड़ा व ईसीएम के सभी सदस्यगण मौजूद थे। कोषाध्यक्ष सीए अनिल कुमार शारदा ने सभी का आभार प्रकट किया।





# पर्यावरण संरक्षण का अनूठा अभियान

## 25 हजार पौधे किए वितरित



### विद्यार्थियों ने पौधों के संरक्षण का लिया संकल्प

इस बार का स्वतंत्रता दिवस समारोह सांस्कृतिक प्रस्तुतियों की दृष्टि से तो अनूठा रहा ही। साथ ही इस दिन एक और अभिनव अभियान का शुभारंभ किया गया। यह था हमारे आसपास के वातावरण को हरा-भरा बनाने के उद्देश्य से पौधा वितरण व पौधारोपण का। पौधारोपण का यह कार्यक्रम इस मायने में अनूठा था कि इसमें सिर्फ पौधारोपण करवाकर ही अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं कर ली गई, बल्कि पौधारोपण करने वाले विद्यार्थियों को पौधों के संरक्षण की जिम्मेदारी भी दी गई। किसी सुविधाजनक स्थान पर रोपित करने की जिम्मेदारी दी गई। विद्यार्थियों ने पौधे को रोपित कर एक वर्ष तक उसके पेड़ बनने तक उसके संरक्षण का वादा किया। इन विद्यार्थियों को पर्यावरण सैनिक का नाम दिया गया।

ईसीएमएस की शिक्षण संस्थाओं में लगभग 25000 विद्यार्थी हैं। करीब 1500 शिक्षक व अन्य स्टाफ हैं। ईसीएमएस के महासचिव मधुसूदन बिहानी ने बताया कि जिस उत्साह के साथ विद्यार्थियों ने पौधों के संरक्षण का वादा किया है, उससे लगता है कि 50-60 प्रतिशत पौधे तो पेड़ के रूप में नजर आएंगे ही। इन पर्यावरण सैनिकों को एक वर्ष के दौरान पौधे के छायाचित्र और लेखन के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करके यह रिपोर्ट अपने शिक्षक को देनी होगी। इस अभियान का सबसे महत्वपूर्ण पहलू भी यही है। पौधे की प्रगति व उससे संबंधित चित्र व लेखन में श्रेष्ठ रहने वाले बच्चों को परीक्षा में पांच अतिरिक्त अंक दिए जाएंगे। इस तरह पौधारोपण का यह गैर शैक्षणिक कार्य शैक्षणिक गतिविधि में शामिल हो गया है।

इस अभियान में समाज के धामाशाह श्री रामस्वरूप जानू का अतुलनीय सहयोग रहा। माना जा रहा है कि इस तरह का अभियान संभवतः अब तक कहीं भी देखने-सुनने में नहीं आया। ईसीएमएसका यह अभियान एक इतिहास रचेगा, इसमें संदेह नहीं।





दी एजुकेशन कमेटी ऑव दी माहेश्वरी समाज (सोसायटी), जयपुर  
(सत्र 2022-25)

श्री केदार मल भाला	अध्यक्ष
श्री बजरंग लाल बाहेती	उपाध्यक्ष (शिक्षा)
श्री मधु सूदन बिहाणी	महासचिव शिक्षा
श्री अनिल कुमार सारडा (सीए)	कोषाध्यक्ष (शिक्षण संस्थाएँ)
श्री कमल किशोर साबू	शिक्षा सचिव (MHS, तिलक नगर)
श्री अमित गट्टानी (सीए)	शिक्षा सचिव (MPS, जवाहर नगर)
श्री प्रकाश बिड़ला	शिक्षा सचिव (MBV, चौड़ा रास्ता)
श्री घनश्याम कचौलिया	शिक्षा सचिव (MGPS, विद्याधर नगर)
श्री गणेश बांगड़ (सीए.)	शिक्षा सचिव (MPS, प्रताप नगर)
श्री दिनेश कुमार मोदानी	शिक्षा सचिव (MGPGC, प्रताप नगर)
श्री दीपक सारडा (कम्प्यूटर इंजीनियर)	शिक्षा सचिव (MPS INT, भामा मार्ग)
श्री श्याम सुन्दर तोतला	शिक्षा सचिव (MPS, बगरू)
श्री अशोक कुमार मालू	शिक्षा सचिव (MPS, कालवाड़)
श्री अरुण कुमार मालू	शिक्षा सचिव (MPS, संस्कृति बनीपार्क)
श्री रोहित (माहेश्वरी) परवाल (सीए)	शिक्षा सचिव (MPS, संस्कृति जगतपुरा)
श्री द्वारका दास नोवाल	भवन मंत्री (MHS, तिलक नगर)
श्री सुमित काबरा	भवन मंत्री (MPS, जवाहर नगर)
श्री प्रकाश काहल्या	भवन मंत्री (MBV, चौड़ा रास्ता)
श्री आशीष जाखोटिया	भवन मंत्री (MGPS, विद्याधर नगर)
श्री अजय सारडा	भवन मंत्री (MPS, प्रताप नगर)
श्री राम अवतार काबरा	भवन मंत्री (MGPGC, प्रताप नगर)
श्री महेश चांडक	भवन मंत्री (MPS INT, भामा मार्ग)
श्री अरविन्द मांघनिया	भवन मंत्री (MPS, बगरू)
श्री श्याम सुन्दर जाजू	भवन मंत्री (MPS, कालवाड़)
श्री वैभव सोमानी	भवन मंत्री (MPS, संस्कृति बनीपार्क)
श्री विपिन साबू	भवन मंत्री (MPS, संस्कृति जगतपुरा)
श्री महेश परवाल	सदस्य
श्री महेश साबू	सदस्य
श्री भगवान लढड़ा	सदस्य
श्री राजेश सोड़ानी	सदस्य
श्री मनोज मुन्दड़ा	महामंत्री-श्री माहेश्वरी समाज
श्री प्रदीप बाहेती	निवर्तमान अध्यक्ष
श्री नटवर लाल अजमेरा	निवर्तमान महासचिव शिक्षा



केदारमल भाला  
अध्यक्ष

## डिजिटल तकनीक आधारित शिक्षा में कायम रहे गुरु-शिष्य परंपरा

आज हर क्षेत्र में बदलाव को लहर चल रही है तो शिक्षा का क्षेत्र भला कैसे बचा रह सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में भी अनेक परिवर्तन हो रहे हैं। यह परिवर्तन पाठ्यक्रमों के बदलाव से लेकर डिजिटल तकनीक तक देखने में आ रहे हैं। अब केवल कॉपी-किताबों से पढ़ना पिछड़पन माना जाने लगा है। कक्षाएं हाइटेक होने लगी हैं। कंप्यूटर, आई-फोन, टेबलेट आदि ने कक्षाओं में जगह बना ली है। कोरोना काल में तो न्यायालय स्कूलों ने ऑनलाइन स्टडी के द्वारा बच्चों को पढ़ाई से जोड़े रखा था, वरना एक-डेढ़ साल के कोरोना काल में बच्चे पढ़ना ही भूल जाते। ऑनलाइन तकनीक ने बच्चों को पढ़ाई में इतना व्यस्त रखा कि उन पर किसी अवसाद का असर नहीं हुआ।

कोरोना काल तो निकल गया, लेकिन ऑनलाइन स्टडी ने अपने पैर जमा लिए। अनेक शिक्षण संस्थाओं ने इसे अधिकार्थिक रूप में अपना लिया। शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल तकनीक का बोलबाला हो गया। इसमें कोई बुराई भी नहीं है। परिवर्तन जीवन का नियम है। गुरुकुल पद्धति से हम डिजिटल युग में आ गए। जहां गुरु और शिष्य को आमने-सामने बैठने की जरूरत नहीं है। डिजिटल तकनीक ने पढ़ाई को सुविधाजनक बना दिया, बच्चों के बसों का बोझ कम कर दिया। पर वास्तविक गुरु उनकी नजरों से दूर होने लगा। डिजिटल तकनीक से वह पढ़ाई में तो तारकी करने लगा, लेकिन चरित्र निर्माण व संस्कारशील होने में वह पीछे रह गया, क्योंकि मशीनें चरित्र निर्माण और संस्कार नहीं सिखातीं। डिजिटल तकनीक से पढ़ाई में एक और समस्या का सामना करना पड़ रहा है, वह यह कि डिजिटल तकनीक का जिस तेजी से विस्तार हो रहा है, उस गति से इसके विशेषज्ञ शिक्षक नहीं बढ़ रहे हैं। साथ ही यह तकनीक कम्बार्ड शहरों व गांवों के बच्चों को लाभ नहीं पहुंचा पा रही है, क्योंकि वहां बिजली सहित अनेक बुनियादी सुविधाओं का भी अभाव है।

शिक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि अभी हम उस स्थिति में नहीं पहुंचे हैं कि पूर्णतः डिजिटल तकनीक पर निर्भर हो जाएं। इसके अलावा निम्न मध्यमवर्गीय परिवारों में कंप्यूटर, लैपटॉप आदि खरीदना संभव नहीं है। इसलिए हमें डिजिटल तकनीक और गुरु-शिष्य परंपरा में तालमेल बनाकर चलना होगा। सरकार को भी इस मुद्दे पर सोचना होगा, ताकि साधारण परिवारों के बच्चे भी बेरोकटोक पढ़ सकें। इस मुद्दे पर बुद्धिजीवी वर्ग को संघन करना चाहिए। आधुनिकता और परंपरा का सामंजस्य ही हमारे देश को पहचान है।



## From the Gen. Secretary's Desk



**Madhu Sudan Bibani**  
*Gen. Secretary (Edu.)*

**T** rue genius lies in not doing something extraordinary over something simple, but doing something simple extraordinarily. In the concrete and mechanised enterprise of education today, we find ourselves continually faced with a lack of creativity; we find ourselves devoid of fun and organic learning which stimulates the mind and soul. Education is not merely a performance or a degree which runs its course in a few years and produces factory-finish products, rather, it is a soil to plant ourselves into, and accept the raw and organic virtues of life. It is about learning life and learning to grow as individuals as much as it is about learning to survive in a world of digitalism and machine-learning. In all right, I find myself overcome with gladness and gratitude to serve as the General Secretary Education of the Education Committee of the Maheshwari Samaj, implanting the ideology of traditional consistent education with contemporary relevance, value, authenticity, creativity and identity. With humility and dedication have I collected a beautiful mix of flowers in my garden of achievements, let me offer a fragrant overview of it to all of you.

An integrated initiative to impart free of cost IIT-level classes to grades IX and X for Science and Mathematics within the school premises was a remarkable step which received widespread receptivity and appreciation. There is no limit to a curious mind which is intent on learning the ways of the world. With our nascent initiative to provide students a complete learning service, we have elected the best faculties from across our nine reputed sister institutions to provide online evening classes to students of grade VI, VII, and VIII, thereby attempting to unify the frayed ends of our students' learning experience.

Our existence remains dependent on the survival of our planet. With an Eco critical flair, we inaugurated and set into motion a GO GREEN drive wherein we distributed approximately 25000 saplings to students as well as staff to raise critical awareness about the exploits of humankind and the alarming levels of ecological imbalance arising from all spheres of life. With a vision to globalise education and educational institutions, and to instil in students a transnational attitude, we invited delegations from the US and Turkey with the project known as 'Global Village'. Our Central Education Committee (CEC) strives for a common examination system wherein all our sister institutions collate their inputs to curate a common question paper in order to standardise the process of testing pattern, evaluation, review and feedback. Amid a variety of patterns and scheme of questions, we choose the one that is accessible and attemptable.

While our steps to broaden the prospect of our educational sector remain small, the effect is grand and growing. With utmost sincerity and solemnity, the Education Committee of Maheshwari Samaj envisages the dream of inaugurating and initiating its own university in due

course of time to broaden its horizons of educational engagements. Whatever the Sun touches, it illuminates. We believe each of our students is a Sun in their own right and capacity, and we empower them to transcend borders and horizons in their pursuit of learning. After all, the world is their playground and life their ultimate teacher. An impressive number of students excel in a variety of activities and endeavours which grants them the prestige of competing at state, national and international levels. They win and if not, they learn.

Learning at our institutions is marked by a combination of theory and practice. As the world grows increasingly goal-oriented and technology-intensive, we make sure the students' learning is honed by the best of the facilitators who are adept in dealing with the world. We support a globalised form of learning where students interact with delegations from abroad and learn to engage in meaningful discourse and deliberation. Our quest for a vicarious experience allows us to make space for the student to learn outside the four-walled confines of the classroom. We invite renowned public figures, activists, educators, celebrities, academicians, authors, among others to dispense first-hand insights and knowledge in a variety of fields which our students aspire for. We train them to not only acquire and assimilate the textbook knowledge for formal application, but hold seminars, workshops and education fairs which cultivate soft skills like communication, problem solving, work ethics, interpersonal relations, and many more. Laboratories, playgrounds, arenas for particular sports, excursions to parks and public places, annual cultural programmes, arts, dance, music and the opportunity to lead the school student council are some of the numerous channels we offer which harbour the hidden talent and genius of our students.

If students are saplings, then educators are the soil they root in. We attend to the needs and requirements of our educators so as to cater them an uplifting and transformative work experience. Regular teacher training programmes, seminars and workshops are facilitated in order to equip our educators and instructors with contemporary advances in the field of academia and industry. They are not only informed, but just as students, expected to perform their imagination, share insights, exchange ideas and build an ecosystem of collaborative teaching-learning effort.

To quote Rabindranath Tagore, "Where the mind is without fear and the head is held high, Where knowledge is free," we actively strive for the digitisation of the academic sphere which makes knowledge accessible anytime any day. The ascension of our alumni network to a full-fledged digital platform specifically for the purpose of exchange and connection long after they graduate from our grounds, is a small venture towards such digitisation. With utmost honour and delight, I pronounce that this e-newsletter marks a small step towards a giant leap for us in making education, academia and learning sovereign, accessible and free. A symbol of digitisation of knowledge and a cascade of creativity, the newsletter aspires to create socially aware and responsible individuals by exhibiting multifarious talents, skills, thoughts and initiatives, seeking to empower and inform the reader. We set afoot a set of guiding principles for our educators and learners which empower students to dispel all unreasonable expectations and study, play, debate, organise, lead, quiz, compete with vim and vigour. Our principles illuminate and prescribe virtues of respect, integrity, solemnity, perseverance, patience and excellence among others. In our humble and pious institutions today, we shape the brilliant and imaginative minds and souls of tomorrow, encouraging them to master the small things and make greater impact in their own as well as others' lives.

Every year we celebrate teacher's day in a grand way for all the teachers and staff. This year Shri Jagdish Sharma (Managing Editor, Dink Bhaskar) is the Chief Guest and Shri A.V.Vaman Kumar (Chairman JCI India Skill Development Committee) is the keynote speaker. Hearty congratulations to everyone who made this e-newsletter a possibility.

With deepest gratitude